इंद्रप्रस्थ निवासी होने का अनुभव करना

इन्द्र अर्थात् सदा ज्ञान की बरसात बरसाने वाले, कांटों के जंगल में हरियाली लाने वाले। इन्द्रप्रस्थ और मनुष्य के बारे में यह कहाँ है की

1 परियों के पंख प्रसिद्ध हैं। इन्द्रपस्थ में सिवाए परियों के और कोई भी मनुष्य निवास नहीं कर सकता।

2 मनुष्य अर्थात् जो अपने को आत्मा न समझ, मानव अर्थात् देह समझते हैं। ऐसे देह-अभिमानी इन्द्रप्रस्थ में निवास नहीं कर सकते।

3 इन्द्रप्रस्थ निवासियों को देह-अभिमानी मनुष्यों की बदबू फौरन अनुभव होती है।

23.01.77

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, अमृतवेले आप ने बच्चों की ड्रिल में क्या देखा?

उत्तर : मीठे बच्चे, अमृतवेले बाप-दादा ने देखा की :-

1. ड्रिल करने के लिए समय की सीटी पर पहुँचने वाले नम्बरवार पहुँच रहे थे। पहुँचने वाले काफी थे लेकिन तीन प्रकार के बच्चे देखे।

2. एक थे - समय बिताने वाले; दूसरे थे - संयम निभाने वाले; तीसरे थे - स्नेह निभाने वाले। हरेक का पोज (Pose) अपना-अपना था।

3. बुद्धि को ऊपर ले जाने वाले बाप से, बाप समान बन, मिलन मनाने वाले कम थे।

4. रूहानी ड्रिल करने वाले ड्रिल करना चाहते थे लेकिन कर नहीं पा रहे थे।

23.01.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

मीठे बाबा, संयम निभाने वाली आत्मा की निशानी क्या होगी?

बापदादा :-

प्यारे बच्चे,

●● बाप के आगे गुणगान करने के बजाय, बाप द्वारा सर्व शक्तियों की प्राप्ति करने के बजाय, निन्द्रा के नशे की प्राप्ति ज्यादा आकर्षण करती है।

●● सेमी (Semi) नशा भी होता है। समय की समाप्ति का इन्तजार होता है। बाप से लगन के बजाय सेमी निन्द्रा के नशे की लगन ज्यादा होती है।

23.01.77

23-1-77

अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

1) परियों के पंख प्रसिद्ध हैं
इन्द्रप्रस्थ में सिवाय परियों के और
कोई भी मनुष्य निवास नहीं
कर सकता

मनुष्य अर्थात् जो अपने को आत्मा
न समझ, मानव अर्थात् देह
समझते हैं ऐसे देह-अभिमानी इन्द्रप्रस्थ
में निवास नहीं कर सकते

23-01-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं इन्द्रसभा की परि हूँ।

इन्द्रसभा की परि अर्थात् महीन बुद्धि। एक सेकेण्ड में इस देह की दुनिया से परे अपने असली स्थिति में स्थित होने वाली।

23-01-77

महीनता ही महीनता है

'इन्द्रप्रस्थ की इन्द्रसभा'
* परियों के पंख प्रसिद्ध हैं। इन्द्रप्रस्थ में सिवाए परियों के और कोई भी मनुष्य निवास नहीं कर सकता। मनुष्य अर्थात जो अपने को आत्मा न समझ, मानव अर्थात देह समझते है। ऐसे देह-अभिमानी इन्द्रप्रस्थ में निवास नहीं कर सकते।
* 'महीन बुद्धि' बनो। वर्तमान समय यही विशेष परिवर्तन चाहिए।
* बुद्धि द्वारा बार-बार अशरीरी-पन की एक्सरसाइज

* इन्द्र अर्थात् सदा ज्ञान की बरसात बरसाने वाले, कांटों के जंगल में हरियाली लाने वाले